चिरंजीव राव की कृति का विमोचन और डॉ. मौना कौशिक का सम्मान

रायगढ़ । डॉ. मीनकेतन प्रधान पूर्व प्राध्यापक किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय रायगढ़, संस्थापक विश्व हिन्दी अधिष्ठान द्वारा प्रकाशित आंध्रप्रदेश के साहित्यकार चिरंजीव राव की सद्यः प्रकाशित काव्य कृति ' बाग - जलियाँवाला ' का विमोचन तथा वरिष्ठ प्रवासी हिन्दी साहित्यकार डॉ. डॉ. मौना कौशिक -सोफिया यूनिवर्सिटी बल्गारिया का सम्मान बिलासपुर के प्रयास प्रकाशन -संस्कार भवन में दिनांक 25 /2/26 को मुख्य अतिथि -न्यायमूर्ति डॉ. चंद्रभूषण वाजपेयी के मुख्य आतिथ्य , डॉ. श्यामलाल निराला -प्राचार्य ज.पी. वर्मा शासकीय महाविद्यालय बिलासपुर , हिन्दी छत्तीसगढ़ी कथाकार डॉ. विनोद कुमार वर्मा के विशिष्ट आतिथ्य तथा डॉ. मीनकेतन प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।प्रथम चरण के कार्यक्रम का आरंभ डॉ. विद्या प्रधान , पंकज शर्मा - संयोजक विश्व हिंदी अधिष्ठान-रायगढ़, डॉ. ज्ञानेश्वरी सिंह-महासचिव भाषा सहोदरी हिंदी समिति-दिल्ली, देवम् फाउंडेशन सोफिया-बुल्गारिया, डॉ. राघवेंद्र दुबे - अध्यक्ष प्रयास प्रकाशन साहित्य अकादमी एवं अंजनी तिवारी सुधाकर -अध्यक्ष राष्ट्रीय कवि संगम-बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान अतिथियों द्वारा सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन तथा रामनिहोरा राजपूत की सरस्वती वंदना से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति डॉ.चंद्रभूषण वाजपेई , पूर्व कुलपति - हिदायतुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी रायपुर ने अपने उद्बोधन में डॉ. मौना कौशिक के प्रदेय की सराहना करते हुए उनके कार्यों को वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा,साहित्य और सांस्कृतिक विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण बताया । उन्होंने आज के संदर्भ में हिंदी भाषा की वैश्विक पहचान बनाने में प्रवासी भारतीयों के योगदान का भी उल्लेख करते हुए साहित्य के माध्यम से अपने इतिहास के महत्त्व पूर्ण पन्नों को देश के युवा नागरिकों के समक्ष रखना राष्ट्रीय कर्तव्य बताया। इसी तारतम्य में न्यायमूर्ति वाजपेयी ने 'बाग जलियांवाला ' के काव्य कृतिकार चिरंजीव राव की रचनात्मकता को भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की कारुणिक गाथा बताते हुए राष्ट्र प्रेम की भावना को विकसित करने का महती उद्देश्य निरूपित किया । कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. श्याम लाल निराला- प्राचार्य ज पी वर्मा महाविद्यालय बिलासपुर ने आंध्रप्रदेश के रचनाकार चिरंजीव राव की रचना को राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कहा तथा डॉ. मौना कौशिक के साहित्यिक योगदान को हिन्दी के विकास-विस्तार में सफल प्रयास बताया।डॉ. निराला ने इस आयोजन को बिलासपुर साहित्यधानी में निरंतर चलने वाले साहित्यिक अनुष्ठानों की महत्त्वपूर्ण कड़ी बताया ।विशिष्ट अतिथि डॉ . विनोद कुमार वर्मा -लाला जगदलपुरी सम्मान से सम्मानित साहित्यकार ने पुस्तक विमोचन और सम्मान उपक्रम को सार्थक बताते हुए संदर्भगत नारी शक्ति की प्रेरक सत्य कथा पर आधारित अपनी बहुप्रशंसित कहानी 'मछुआरे की लड़की ' की अन्तर्वेदना को उजागर किया। उन्होने डॉ.मौना कौशिक के हिंदी साहित्य के वैश्विक उन्नयन में दिए जा रहे योगदान की सराहना की । जिस पर कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. मीनकेतन प्रधान ने विदेशी भाषाओं में भी ' मछुआरे की लड़की ' कहानी के अनुवाद को उपदेय कहा।इस अवसर पर उन्होंने अपने वक्तव्य में डॉ .मौना कौशिक द्वारा सोफिया विश्वविद्यालय बुल्गारिया में बल्गारियन साहित्य को हिंदी व हिंदी को बल्गारियन भाषा में अनुवाद के माध्यम से स्थापित किये जा रहे प्रयासों को हिन्दी की वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए सार्थक बताया।उन्होंने अधिष्ठान द्वारा प्रकाशित चिरंजीव राव की कृति को प्रेरक सिद्ध किया ।विश्व हिंदी अधिष्ठान रायगढ़ के वैश्विक समन्वयन में योगदान को प्रस्तुत करते हुए प्रयास प्रकाशन साहित्य अकादमी के संरक्षक डॉ .विनय कुमार पाठक के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन के प्रति कृतज्ञता प्रकट किया।

इस गरिमामय आयोजन में बुल्गारिया से आकर कार्यक्रम में सहभागी प्रवासी हिंदी भाषा विदुषी डॉ.मौना कौशिक ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी साहित्य व बल्गारियन कला -साहित्य के मध्य समन्वयन के साथ इसे अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने की दिशा में वे क्रियाशील हैं । बल्गारियन छात्र हिंदी भाषा में स्नातक व परास्नातक कर रहे हैं। डॉ. कौशिक ने गोस्वामी तुलसीदास रचित हनुमान चालीसा का बल्गारियन व अंग्रेजी में लिप्यंतरण कर भारतीय साहित्य-संस्कृति को सर्वोच्च ऊँचाई दी है ।बल्गारिया के लोगों में इसे लोकप्रिय बनाने तथा इसकी आध्यात्मिक शक्ति के प्रति जागरूकता लाने का कार्य देवम् फाउंडेशन के माध्यम से किया जा रहा है।उन्होंने 'बाग जलियांवाला ' काव्य कृति के विमोचन में सहभागिता के लिए हर्ष प्रकट करते हुए चिरंजीव राव को श्रेष्ठ साहित्यकार कहा।इस क्रम में कृतिकार चिरंजीव राव ने अपनी काव्य कृति 'जलियाँवाला बाग ' की रचना को उस नृशंस हत्याकांड में मारे गए निर्दोष स्वतंत्रता आंदोलन के सत्याग्रहियों के प्रति श्रद्धांजलि बताया। इस गौरवशाली अवसर पर विश्व हिन्दी अधिष्ठान द्वारा प्रवासी भारतीय साहित्यकार डॉ .मौना कौशिक को हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार में योगदान के लिए तथा चिरंजीव राव को उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिए छत्तीसगढ़ के साहित्य पुरोधा व छायावाद के जनक पद्मश्री मुकुट धर पाण्डेय की स्मृति में सम्मान पत्र दे कर सम्मानित किया गया ।कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ .राघवेन्द्र दुबे ने किया। स्वागत संबोधन अंजनी कुमार तिवारी'सुधाकर' द्वारा व आभार प्रदर्शन डॉ.श्रीमती विद्या प्रधान द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में समसामयिक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने अपनी काव्य रसासिक्त रचनाओं से श्रोता वर्ग को मंत्र मुग्ध कर दिया। रचनापाठ करने वाले रचनाकार -अंजनी कुमार तिवारी सुधाकर, डॉ . विवेक तिवारी,डॉ.शत्रुघ्न जेसवानी,राजेश कुमार सोनार, शीतल प्रसाद पाटनवार, राम निहोरा राजपूत, बालमुकुंद श्रीवास,श्रीमती कामना पाण्डेय,श्रीमती सुषमा पाठक,श्रीमती मीना दुबे,महेन्द्र दुबे,दीपक दुबे,पंकज शर्मा,डॉ.मौना कौशिक, डॉ.मीनकेतन प्रधान, चिरंजीव राव , डॉ .विनोद कुमार वर्मा,डॉ राघवेन्द्र कुमार दुबे।इस आयोजन की व्यापक सफलता के लिए प्रो. आर. के. पटेल, डॉ बेठियार सिंह साहू,डॉ. राजेश दुबे, डॉ. ज्ञानेश्वरी सिंह, अमित सदावर्ती, वसंत पंडा, डॉ. सीमा प्रधान, बनवारी लाल देवांगन, हरिशंकर गौराहा, सौरभ सराफ, डॉ. करुणा पांडे,मनीष पांडेय, युगल किशोर पंडा, लोचन गुप्ता , डॉ. एस . पी. गुप्ता तथा अन्य साहित्यकारों ने बधाई दी है ।

आज का सुविचार : जीवन में ईर्ष्या नहीं करें

जीवन में, ईर्ष्या वो आग है
जो किसी ईंधन को नहीं
अपितु हमारी प्रसन्नता,और
हमारे आनन्द को जलाती है।
आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो।

- जगदीश जी गर्ग
पालीवाल सेतरावा
द्वारा सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज) स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार।
श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान।

पाकिस्तान में सेना पर अंकुश लगाने की कोशिश

पाकिस्तान की सियासत के सात दशकों का इतिहास यदि एक वाक्य में पिरोना हो, तो वह 'लोकतंत्र और वर्दी के बीच का कभी न खत्म होने वाला द्वंद्व' है। 14 अगस्त 194 को वजूद में आने के बाद से ही इस मुल्क ने एक ऐसी विडंबना को जिया है जहाँ संविधान की किताब तो नागरिक शासन की बात करती है, लेकिन सत्ता की असली चाबी रावलपिंडी के जनरल हेडक्वार्टर्स में महफूज रहती है। पाकिस्तान में सेना पर अंकुश लगाने की कोशिशें कबल राजनीतिक सुधारों का हिस्सा नहीं रही हैं, बल्कि ये अस्तित्व की वो लड़ाइयां रही हैं जिनमें कई प्रधानमंत्रियों ने अपनी कुर्सी गवाई, जेल की सजा काटी और कुछ ने तो अपनी जान से भी हाथ धोया। इस संघर्ष की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी साल 2006 का 'लोकतंत्र का चार्टर' है, जिसे नवाज शरीफ और बेनजीर भुट्टो ने लंदन की निर्वासित गलियों में तैयार किया था। यह दस्तावेज केवल एक समझौता नहीं था, बल्कि पाकिस्तानी सेना के उस 'हाइब्रिड मॉडल' के खिलाफ एक सीधा युद्धघोष था, जिसने देश को विकास के बजाय बारूद और कर्ज के ढेर पर ला खड़ा किया।

पाकिस्तान में सेना का वर्चस्व अचानक पैदा नहीं हुआ। 1958 में अयूब खान, 19 में जिया-उल-हक और 1999 में परवेज मुशर्रफ द्वारा किए गए सैन्य तख्तापलट ने मुल्क की राजनीतिक जड़ों को इतना खोखला कर दिया कि वहां की अवाम और सियासतदानों के मन में यह बात बैठ गई कि 'तख्त' का रास्ता सेना की मंजूरी से होकर ही गुजरता है। सेना ने खुद को न केवल सरहदों का रखवाला, बल्कि 'वैचारिक सीमाओं' का रक्षक और राष्ट्रीय सुरक्षा का एकमात्र ठेकेदार घोषित कर दिया। इसी पृष्ठभूमि में जब 2006 में चार्टर ऑफ डेमोक्रेसी पर हस्ताक्षर हुए, तो उम्मीद की एक किरण जगी थी। इस चार्टर में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि सेना को राजनीति से पूरी तरह बेदखल किया जाएगा, खुफिया एजेंसियां (ढ्ढष्ठ और स्ढ्ढ) केवल प्रधानमंत्री के प्रति जवाबदेह होंगी, और किसी भी सैन्य अधिकारी को संवैधानिक पद पर बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह पाकिस्तान के इतिहास में पहली बार था जब दो कट्टर प्रतिद्वंद्वी दल, पीपीपी और पीएमएल-एन, अपनी आपसी रंजिश भुलाकर एक साझा दुश्मन यानी 'सैन्य प्रतिष्ठान' के खिलाफ एकजुट हुए थे।

हालांकि, इतिहास गवाह है कि पाकिस्तान में सेना पर लगाम कसने की हर कोशिश को खुद सेना ने बहुत ही शातिर तरीके से नाकाम किया। 200 में बेनजीर भुट्टो की शहादत और उसके बाद 2008 के

चुनावों के बाद बनी लोकतांत्रिक सरकार ने जब भी सेना के अधिकारों को चुनौती देने की कोशिश की, उसे 'मेमोगेट स्कैंडल' या 'डॉन लीक्स' जैसे विवादों में उलझा दिया गया। सेना ने अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए एक नया तरीका ईजाद किया जिसे 'हाइब्रिड शासन' कहा जाता है। इसमें सीधे तौर पर मार्शल लॉ नहीं लगाया जाता, बल्कि एक ऐसी राजनीतिक कठपुतली को सत्ता में बिठाया जाता है जो सेना के हितों की रक्षा कर सके। इमरान खान का 2018 में सत्ता में आना इसी प्रयोग का हिस्सा माना गया था, लेकिन विडंबना देखिए कि जिस इमरान खान को सेना ने 'प्रोजेक्ट' के तौर पर लॉन्च किया था, वही 2022 में सत्ता से बेदखल होने के बाद सेना के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गए। आज 2026 के दौर में भी पाकिस्तान उसी दोराहे पर खड़ा है।

सेना पर अंकुश लगाने की राह में सबसे बड़ी बाधा पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पर सेना का कब्जा है। 'मिलिट्री इंक' के नाम से मशहूर यह व्यवस्था बैंकिंग, खाद, सीमेंट, अनाज और रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में सेना का एकाधिकार सुनिश्चित करती है। जब किसी संस्था के पास देश की अर्थव्यवस्था का इतना बड़ा हिस्सा और अत्याधुनिक हथियार दोनों हों, तो निहत्थे राजनेता उसके सामने बौने नजर आते हैं। इसके अलावा, पाकिस्तान की न्यायपालिका ने भी अक्सर सेना के कदमों को 'जरूरत का सिद्धांत' बताकर जायज ठहराया है। जब तक जजों की नियुक्तियों और उनके फैसलों पर सेना का परोक्ष दबाव रहेगा, तब तक लोकतांत्रिक अंकुश की बात केवल एक किताबी कल्पना बनी रहेगी। वर्तमान में आसिम मुनीर के कार्यकाल में सेना की शक्ति और भी केंद्रित हो गई है, जहाँ विशेष सैन्य अदालतों के माध्यम से नागरिकों और राजनेताओं को नियंत्रित किया जा रहा है।

फरवरी 2026 की हालिया राजनीतिक हलचल, जिसमें शहबाज शरीफ सरकार ने इमरान खान की पार्टी (ढ्ढक्क्रढ्ढ) को फिर से 'लोकतंत्र के चार्टर' पर साइन करने का न्यौता दिया है, इस दिशा में एक हताश लेकिन महत्वपूर्ण प्रयास दिखती है। यह प्रस्ताव इस अहसास से उपजा है कि जब तक राजनीतिक दल आपस में लड़ते रहेंगे, सेना 'फूट डालो और राज करो' की नीति से अपना उल्लू सीधा करती रहेगी। यदि इमरान खान और वर्तमान सत्ताधारी गठबंधन सेना के खिलाफ एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम पर सहमत हो जाते हैं, तो यह पाकिस्तान की सेना के लिए दशकों बाद सबसे बड़ी चुनौती होगी। लेकिन यहाँ भी संदेह के बादल गहरे हैं; क्या इमरान खान वास्तव में लोकतंत्र को मजबूत करना चाहते हैं या वे केवल सेना के साथ अपनी व्यक्तिगत 'डील' की तलाश में हैं? पाकिस्तान की राजनीति में 'डील' और 'ढील' (रियायत) दो ऐसे शब्द हैं जिन्होंने वहां के लोकतंत्र को कभी परिपक्व नहीं होने दिया।

भारत और शेष विश्व के लिए पाकिस्तान में सेना पर अंकुश लगाने की कोशिशें बेहद संवेदनशील मामला हैं। एक ऐसी सेना जिसके हाथ में परमाणु हथियारों का बटन हो और जिसका राजनीतिक अस्तित्व भारत-विरोध पर टिका हो, वह कभी भी शांति की समर्थक नहीं हो सकती। यदि वहां की नागरिक सरकारें वास्तव में सेना को बैरकों तक सीमित करने में सफल होती हैं, तो इससे न केवल कश्मीर मुद्दे पर बातचीत का एक ठोस धरातल तैयार होगा, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया में स्थिरता आएगी। लेकिन यह रास्ता कांटों भरा है। सेना ने दशकों से यह नैरेटिव गढ़ा है कि बिना उनके पाकिस्तान का वजूद खत्म हो जाएगा। इस नैरेटिव को तोड़ने के लिए पाकिस्तान के राजनेताओं को न केवल एकजुट होना होगा, बल्कि उन्हें सुशासन के माध्यम से जनता का विश्वास भी जीतना होगा।

अंततः, पाकिस्तान में सेना पर अंकुश लगाने की कोशिशें तब तक सफल नहीं हो सकतीं जब तक कि वहां का मध्यम वर्ग और युवा पीढ़ी इस बदलाव के लिए सड़कों पर खड़ी न हो। 9 मई 2023 की घटनाओं ने दिखाया था कि जनता के एक हिस्से में सेना के खिलाफ गुस्सा तो है, लेकिन बिना संगठित नेतृत्व और संस्थागत सुधारों के, यह गुस्सा केवल अराजकता पैदा करता है, बदलाव नहीं। 2006 का चार्टर आज भी एक मार्गदर्शक दस्तावेज की तरह मौजूद है, लेकिन इसकी सार्थकता तभी है जब इसे सत्ता हथियाने का हथियार बनाने के बजाय देश के भविष्य को सुरक्षित करने का संकल्प बनाया जाए। पाकिस्तान को आज एक ऐसे 'सत्य और सुलह आयोग' की जरूरत है जो सेना के राजनीतिक दखल के घावों को भरे और एक ऐसा नया सामाजिक अनुबंध तैयार करे जहाँ बंदूक की ताकत वोट की ताकत के सामने नतमस्तक हो।

- महेन्द्र तिवारी
मोबाइल: 998903240,

संभव हैं समाधान

भगवान् महावीर का जीवन हमको उनके क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के बावजूद उनके कर्मों के ,कष्टों से न घबराने के ,समभाव से सहन करने के अनेकान्तवाद आदि के द्वारा समस्या के समझाने की शिक्षा देता है। वह कर्म चाहे क्षत्रिय कुल में हम जन्म ले या कोई भी कुल में सबके अपने - अपने होते हैं । उन्हें भोगे बिना किसी भी जीव को सही से छुटकारा नहीं मिल सकता हैं। एक घटना प्रसंग एक लड़के ने एक संत को पूछा - मेरे को क्या जो दीख रहा है वही मैं हूँ ? संत ने बताया कि - जो तुमको दिखाई दे रहा है वह हमारा शरीर जीव नहीं अजीव है - वह मूल नहीं है ? वह जो चेतना से शून्य है अजीव है ? जो तुम्हें पुण्य व पाप के योग से मिल रहा है - वह बंध है ? लड़के ने पूछा - कर्मों का बंध कराने वाला कौन है ? आश्रव के शुभ व अशुभ परिणामों से बंध होता है ? आश्रव सारे दुखों का मूल केंद्र है ? लड़के ने कहा आश्रव समस्या है, इसका समाधान ? संत ने बताया कि आश्रव समस्या है व सँवर इस समस्या का समाधान है ? तो फिर प्रश्न - पूर्व अर्जित कर्मों को कैसे समाप्त किया जाय ? संत ने कहा - इसके लिए निर्जरा व तप का सहारा लिया जा सकता है, जिसके द्वारा पुराने अर्जित कर्मों का क्षय संभव है ? इस प्रकार सँवर व निर्जरा ही से सारा समाधान हो जाता हैं व कर्म तथा बंध से छुटकारा मिल सकता है उसका आधार तीर्थंकरों की वाणी है । लड़के ने पूछा कि उनके दर्शन करना चाहता हूँ संत ने कहा इस समय हमारे क्षेत्र में कोई तीर्थंकर नहीं हैं, आचार्य उनके प्रतिनिधि होते हैं , वे जो बात बताते हैं - वह सत्य ही होती है व सत्य ही भगवान है लड़के ने संतों से सम्यकत्व दीक्षा ग्रहण कर ली जिज्ञासाएँ और समाधान का ज्ञान प्राप्ति के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इस सम्यकत्व के समान न कोई रत्न होता है न कोई मित्र, न भाई व न लाभ आदि - आदि तीर्थंकरों द्वारा प्रवेदित वाणी सत्य व निशंक ही होती है संयकत्व की प्राप्ति एक बड़ी उपलब्धि है तथा सम्यकत्व व चारित्र दोनों मिल जाना सोने में सुहागा है । सम्यकत्व के अभाव में चारित्र उतना प्रभावक नहीं हो सकता हैं । वह सम्यत्व विहीन आचार से मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं हैं अतः हमें अपने दृष्टिकोण को यथार्थपरक बनाना है जिससे हर स्थिति में सहज रह आगे बढ़ सकें । हम सदैव जागरूक रहे हर पल,क्या पता किस समय हमारा आयुष्य बंध हो जाए । सत्य अनंत हैं और मनुष्य का ज्ञान सीमित हैं । वह सृष्टि के आरम्भ से ही मनुष्य असीम को मापने, अदृश्य को देखने और अज्ञेय को जानने आदि का प्रयास करता आया हैं । विज्ञान और अध्यात्म दोनों इस खोज के दो मार्ग हैं । वह जहाँ वैज्ञानिक अपने उपकरणों द्वारा सत्य की खोज करता हैं, वही साधक ध्यान और अंतर्दृष्टि आदि के माध्यम द्वारा उसी सत्य तक पहुंचने का प्रयास करता हैं । प्रेक्षा ध्यान इसी आंतरिक विज्ञान की एक सशक्त पद्धति हैं । वह बाहरी प्रयोगों से नहीं बल्कि हमारे भीतर की चेतना के सूक्ष्म कंपन्न से सत्य के अनुभव तक हमको पहुंचाती हैं । हम मनुष्य का मस्तिष्क केवल विचारों का केंद्र नहीं हैं बल्कि ज्ञान और शक्ति के भंडार का अक्षय स्रोत होता हैं। ध्यान इन स्त्रोतों को जाग्रत करने की प्रक्रिया हैं । हम देख सकतें हैं कि प्रेक्षा ध्यान के शिविरों में साधक जब मौन के माध्यम से स्वयं से संवाद करता हैं , तो अनेक जिज्ञासाएँ जन्म लेती हैं । सत्य की खोज की यही जिज्ञासा अध्यात्म की सबसे बड़ी प्रेरणा बन जाती हैं । वह जिज्ञासा और समाधान का यह संवाद तभी सार्थक होता हैं , जब दोनों में तादात्म्य - आत्मीयता और विनम्रता का भाव हों । एक ही वस्तु या विचार में कई गुण होते हैं जो हमारे अलग दृष्टिकोण से किसी को कुछ दिखाई देता है और दूसरे को कुछ अलग दिखाई देता है। वस्तु या विचार की वास्तविकता और सत्य भिन्न हो सकते हैं। वैचारिक मतभेदों, उलझनों, झगड़ो आदि से बचने के लिए व शांति की स्थापना के लिए भगवान् महावीर के अनेकान्तवाद का सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है । अनेकान्तवाद वस्तु के विषय में उत्पन्न एकांतवादियों के विवादों को उसी प्रकार दूर करता है जिस प्रकार हाथी को लेकर उत्पन्न जन्मान्धों के विवादों को नेत्र वाला व्यक्ति दूर कर देता है।इसे संसार जितना जल्दी व अधिक अपनाएगा, विश्व शांति उतनी ही जल्दी संभव है। वह जब एकांगी दृष्टिकोण विवाद और आग्रह से मुक्त होंगे, तभी भिन्नता से समन्वय के सूत्र परिलक्षित हो सकेंगे। वह जीवन का संपूर्ण विकास इससे संभव है। आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी आदि जैसे महान दार्शनिकों ने इसी संवाद को जीवन का केन्द्र बनाया था । उन्होंने जिज्ञासाओं को केवल उत्तर देने का नहीं बल्कि उन्हें आत्मबोध की दिशा में मोड़ने का कार्य किया था । उन्होंने अनेकान्तवाद के सिद्धान्त के आधार पर ही सत्य को देखने की दृष्टि दी थी । वह एक ऐसी दृष्टि जिसमें विरोध नहीं , समन्वय है । वह सीमित नहीं असीम का अनुभव हैं । वह यही कारण हैं कि उनके समाधान केवल उत्तर नहीं बल्कि संयम साधना आदि की दिशा बन गए । अतः हम भगवान् आदि से कुछ ओर न मांगे, उन जैसी सहनशीलता, और अभयदान के भाव आदि - आदि हमारे नस नस में समा जाएं, जिससे हमारा भी आत्मोद्धार हो जाये।हम भी सिद्ध - बुद्ध बन जाएं। यही हमारे लिए काम्य हैं ।

प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)

जांच से घबराता क्यों जनसेवक

परीक्षा हॉल से सत्ता के हॉल तक

परीक्षा केंद्र का दृश्य बड़ा शिक्षाप्रद होता है। विद्यार्थी गेट पर पहुंचते ही अपनी जेबें खाली कर देता है। बेल्ट, घड़ी, यहां तक कि आत्मसम्मान तक उतारकर ट्रे में रख देता है। मेटल डिटेक्टर से गुजरते हुए वह मुस्कराता भी है– 'जांच लीजिए सर, मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं। '

न कोई भाषण, न कोई प्रदर्शन। नियम सबके लिए समान।

लेकिन यही विद्यार्थी जब वर्षों बाद सत्ता की कुर्सी पर बैठता है– नेता या अफसर बनकर–तो कहानी बदल जाती है। यदि दरवाजे पर आयकर विभाग, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो या प्रवर्तन निदेशालय दस्तक दे दे, तो अचानक लोकतंत्र खतरे में पड़ जाता है। जांच को 'राजनीतिक प्रतिशोध' घोषित कर दिया जाता है, और नोटों की गिनती को 'जनादेश पर हमला' बता दिया जाता है।

परीक्षा हॉल में छात्र कहता है– 'मैं निर्दोष हूं, जांच कर लीजिए। '

सत्ता के हॉल में नेता कहते हैं–

'मैं निर्दोष हूं, इसलिए जांच मत कीजिए! '

कितनी अद्भुत तर्कशक्ति है! मानो ईमानदारी की पहली शर्त ही यह हो कि उसकी पुष्टि न हो। जैसे डॉक्टर कह दे– 'मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं, इसलिए जांच की जरूरत नहीं।' या बैंक कहे– 'हम पारदर्शी हैं, इसलिए ऑडिट बंद कर दीजिए। '

असल समस्या जांच नहीं, खुलासे का डर है।

डर इस बात का कि 'सफेद कुर्ते' की धुलाई में असली रंग न उतर आए।

डर इस बात का कि फाइलों की धूल झाड़ते-झाड़ते कहीं करोड़ों की परतें न खुल जाएं।

डर इस बात का कि जनता, जिसे हर पांच साल में 'मालिक' कहा जाता है, सचमुच मालिक की तरह हिसाब न मांग बैठे।

सत्ता में रहते हुए जांच एजेंसियां 'कानून का राज' कहलाती हैं, और विपक्ष में जाते ही वही एजेंसियां 'तानाशाही का औजार' बन जाती हैं। जैसे मौसम के साथ नैतिकता भी बदल जाती हो। कुर्सी पर बैठे-बैठे सिद्धांत भी घूमने वाली कुर्सी की तरह दिशा बदल लेते हैं।

अफसरशाही भी कम रोचक नहीं। नियमों की किताब मोटी है, लेकिन उसका उपयोग चयनित है। सामान्य नागरिक की फाइल पर लाल पेन इतनी तेजी से चलता है कि सांस अटक जाए; परंतु बड़े नामों की फाइलें अक्सर 'विचाराधीन' रह जाती हैं। और जब कभी विचार पूरा हो भी जाए, तो प्रेस नोट पहले तैयार रहता है– 'सभी आरोप निराधार हैं। '

लोकतंत्र की विडंबना यही है–

परीक्षा में नकल करने वाला छात्र पकड़ा जाए तो परिणाम रद्द।

पर सत्ता में गड़बड़ी पकड़ी जाए तो परिणाम 'राजनीतिक षड्यंत्र '। जनता के लिए नियम लोहे जैसे कठोर,

और नेताओं के लिए नियम रबर जैसे लचीले।

यदि सचमुच जनसेवा करनी है, तो जांच से डर कैसा?

जैसे छात्र परीक्षा को अवसर मानता है, वैसे ही जनप्रतिनिधि जांच को पारदर्शिता का अवसर मानें। जो निर्दोष है, वह और मजबूत होकर निकलेगा। और जो दोषी है, वह कम से कम यह स्वीकार करे कि सत्ता सेवा नहीं, सुविधा बन गई थी।

आखिर लोकतंत्र कोई खुली किताब तभी बन सकता है,

जब उसके पन्ने पलटने की हिम्मत भी हो।

वरना परीक्षा हॉल में खड़ा वह छात्र एक दिन पूछ ही बैठेगा–

'सर, हमें तो हर जेब की तलाशी देनी पड़ी थी,

आपकी अलमारी की जांच से इतना भय क्यों? '

कल्याण सिंह राजपूत
'केसर '
देहरिया साहू देवास
(मध्यप्रदेश)

प्रसंगवश

एक प्रवृत्ति : वाह्य नहीं आंतरिक

'जिसे अपनी फ़कीरी पर हमेशा नाज़ होता है। उसी की ठोकरों में हाकिमों का ताज़ होता है।। ' मेरा 20 साल पुराना यह शेर जहां दुनिया के अतीत का एक प्रमाणित सच है वहीं आज भी कम प्रासंगिक नहीं है। इस सच की मिसाल हैं ऐसे किरदार, जो प्रताड़ित होकर भी समझौते को राजी नहीं। यह जानते हुए कि सत्य पीड़ित हो सकता है पराजित नहीं। मुंडकोपनिषद में उल्लेखित 'सत्यमेव जयते' के मंत्र पर प्रबल भरोसा करते हुए। उस एक मंत्र पर जो आज दुर्बल दिखने के बाद भी जीवंत है। निःसंदेह, दौर विकट और विषम है। ईसा के लिए सलीब तैयार है तो सुकरात के लिए ज़हर। दयानंद की मुखरता को मूक करने के लिए रसोइया सुपारी लेने को आतुर है तो शुचिता के प्रतीक शास्त्री और पराक्रम के प्रतीक नेताजी की राह पर चलने वालों की राह में रहस्यमयी मौत बांह पसारे खड़ी है।बावजूद इसके तमाम किरदार हैं जो पूरी दमदारी से अपने फ़कीराना ठाठ को कायम रखे हुए हैं। फ़कीर का मतलब किसी विशेष रंग का चोला ओढ़ना नहीं। स्वांग और आडंबर का आसरा लेना तो बिल्कुल भी नहीं। फ़कीरी वस्तुतः एक प्रवृत्ति है। जो जन्मजात भी हो सकती है व परिस्थितिजनित भी। एक ऐसी प्रवृत्ति जो परमसत्ता के प्रति अगाध आस्था के बूते न कल को लेकर चिंतित होने देती है न विचलित। न भीरू, न भयभीत, न पलायनवादी। फिर सामने कोई नायक हो, महानायक या अधिनायक। नेकी और बदी का बैर कोई नया है क्या। हम तो देवासुर संग्राम की गाथाएं सुन कर बच्चे से बड़े हुए हैं। सतयुग, त्रेता और द्वापर तक षड्यंत्रों से अछूते नहीं रहे। कलियुग तो ठहरता ही कहां है उनके आगे।मेरी अपनी सोच में फ़कीर की जो छवि है वो किसी रहस्यपूर्ण व्यक्ति की नहीं। मेरा मत है कि इसके लिए न कोई चोला या चोगा ज़रूरी है न कोई विशेष तरह का ठिकाना। मेरा मानना है कि जो अपनी असीम आकांक्षाओं और अनंत आवश्यकताओं से विमुक्त हो जाए। जो अंदरूनी और बाहरी तौर पर एक सा है, वही फ़कीर है। जिसके पास बताने को बहुत कुछ हो कर भी छिपाने को कुछ नहीं, वह भी फ़कीर है। विकृत और विसंगत परिवेश में मौन साध कर बैठने के बजाय जो मुखर हो कर ताल ठोक दे, फ़कीर ही है। उसे कोई भी अपने अधीन नहीं कर सकता। न कोई मठाधीश, न कोई शासक।।यह हर युग का शाश्वत सच है। फिर चाहे वो युग महर्षि भृगु या दुर्वासा का हो, संत शिरोमणि रैदास का हो या संत कबीर का। हज़रत सरमद और मंसूर का हो या महाप्राण निराला और बाबा नागार्जुन का। दिव्य-कथा मन्दाकिनी के भागीरथ और गोस्वामी तुलसी के अवतार प्रतीत होने वाले पूज्य गुरुदेव श्री राजेश्वरानंद जी और संत प्रवर श्रद्धेय मोरारी बापू का हो या फिर। आगे न कुछ कहने की आवश्यकता है न लिखने की। यह एक संकेत भी है और संदेश भी। जो सत्य है सिद्ध हो कर रहेगा। आज नहीं तो आने वाले कल में सही। लेखनी को विराम देता हूं अपने 15 साल पुराने एक और शेर से...

'' शाह बन कर के मिलोगे तो मिलेगी ठोकर।
किसी फ़कीर से मिलना तो अदब से मिलना।। '

प्रणय प्रभात श्योपुर (मध्यप्रदेश)
8959493240

आज का चिंतन : किसी का मन, दिल ना दुखाओ

किसी का मन मत दुखाओ, क्योंकि हमारे क्षमा माँगने के बाद भी उसे दुखः अवश्य रहेगा..जैसे..दीवार में से कील निकालने के बाद भी छेद रह जाता है आलोचना से विचलित नहीं होना चाहिए क्योंकि कुछ आलोचनाएँ हमें अच्छा मनुष्य बनाती हैं और कुछ हमारे अच्छा होने का परिणाम होती हैं। सोच कर बोलना और बोलने के बाद सोचना, दो शब्दों के आगे-पीछे प्रयोग मात्र से ही, परिणाम बदल जाते हैं।

- सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज) स्वतंत्र लेखक व साहित्यकार, पत्रकार।श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान